IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY *(IJARETY)*

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

भारतीय लेखिकाओं के साहित्य में पुरुष और किन्नर पात्रों का चरित्र

DR. SYED SHAFI HAIDER AMIL

PROFESSOR, HOD, HINDI, SHIA PG COLLEGE, LUCKNOW, UTTAR PRADESH, INDIA

सार

हिन्दी कथा साहित्य में निचले पायदान पर उपस्थित उपेक्षित वर्गों को केन्द्र में रखकर चिंतन किया जा रहा है जिसमें नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श, किन्नर विमर्श आदि प्रमुख है।यह विमर्श उपेक्षित वर्गों को अपने प्रति होनेवाले अत्याचारों एवं अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए थे किन्तु इनमें अधिकतर वर्गों को न्यूनाधिक रूप से समाज की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी।संवैधानिक दृष्टिकोण से भी इन्हें अधिकार प्राप्त हो चुके थे।यह विमर्श केवल इनमें जागरूकता लाने के लिए थे।

इन सब में केवल एक वर्ग ही ऐसा है जो आज तक अपनी अस्मितागत पहचान के लिए संघर्ष कर रहा है और यह वर्ग है-'किन्नर'।जी हाँ 'किन्नर' जिन्हें साधारण जन 'छक्का' या 'हिजड़ा' कहकर संबोधित करता है।'हिजड़े' शब्द को गाली के तौर पर प्रयुक्त करके संपूर्ण किन्नर समुदाय को अपमानित करता है।यह मात्र एक ऐसा समुदाय था जिसे न तो परिवार ने स्वीकार किया और न ही समाज ने।कानूनी तौर पर भी उन तमाम सुविधाओं से वंचित थे जिन पर इनका हक था।इनकी दयनीय स्थिति को देखकर हिन्दी साहित्य में चिंतन किया जाने लगा और यह चिंतन ही किन्नर विमर्श के रूप में आंदोलन बनकर उभरा।

परिचय

साहित्यकारों ने इनकी समस्याओं को अपनी कृतियों के माध्यम से उजागर करने का सफल प्रयास किया है।हिन्दी साहित्य में किन्नर समुदाय पर केन्द्रित कई उपन्यासों की रचना की जा चुकी है और यह क्रम आज भी निरंतर जारी है।इन उपन्यासों में यमदीप, तीसरी ताली, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, किन्नर कथा, मैं पायल, मेरे हिस्से की धूप, अस्तित्व की तलाश में सिमरन, श्रापित किन्नर आदि है।इन उपन्यासों के माध्यम से उपन्यासकारों ने किन्नर समुदाय के जीवन की त्रासदी व संघर्ष को संवेदनात्मक स्तर पर बड़ी प्रमुखता के साथ उठाया है।

15 अप्रैल 2014 के दिन न्यायमूर्ति के.एस.राधाकृष्णन और न्यायमूर्ति ए.के सीकरी ने इन्हें तृतीय लिंग के रूप में अपनी स्वीकृति देते हुए एक ऐतिहासिक कदम उठाया।हिजड़ों के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द 'किन्नर' को लेकर भी काफी विवाद हुआ।कुछ विद्वानों ने इसका विरोध किया।उनके मतानुसार 'किन्नर' शब्द से तात्पर्य–"किन्नर हिमालय में आधुनिक कन्नोर प्रदेश के पहाड़ी लोग जिनकी भाषा कन्नौरी, गलचा, लाहौली आदि बोलियों के परिवार की है।किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है जिसके प्रधान केन्द्र हिमवत और हेमकूट थे।पुराणों और महाभारत की कथाओं एवं आख्यानों में तो उनकी चर्चाएं प्राप्त होती ही हैं, कादम्बरी जैसे कुछ साहित्य के ग्रंथों में भी उनके स्वरूप निवास क्षेत्र और क्रियाकलापों के बारे में वर्णन मिलते है।"१

हिन्दी साहित्य में किन्नर केन्द्रित कृतियों का विश्लेषण करने के उपरांत उनके जीवन की कुछ प्रमुख समस्याएँ स्पष्ट होती है।इन समस्याओं में सामाजिक एवं पारिवारिक अस्वीकृति, शिक्षा, रोजगार, निवास, वेश्यावृत्ति, यौन शोषण की समस्या आदि मुख्य है।यह समाज सदैव से ही पितृसत्तात्मक रहा है।समाज में नर और नारी को तो स्थान प्राप्त हुआ किन्तु किन्नरों को समाज का हिस्सा न मानकर उन्हें दरकिनार किया गया।जिस प्रकार शरीर के किसी अंग के खराब हो जाने पर उसे अलग कर दिया जाता है ठीक उसी प्रकार परिवार और समाज से इन्हें भी बहिष्कृत कर दिया जाता है।लैंगिक अक्षमता के कारण यह समुदाय उपहास का पात्र बन कर रह जाता है।परिवार, शिक्षा, रोजगार, निवास आदि सुविधाओं के अभाव में ये नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाते है।[1,2]

एक संतान चाहे कैसी भी हो वह अपने माता-पिता के लिए सदैव ही प्रिय होती है।जब माता-पिता अपने शारीरिक विकलांग शिशु को स्वीकार कर लेते है तो फिर लैंगिक दृष्टिकोण से विकलांग अपनी किन्नर संतान का बहिष्कार क्यों करते है?समाज में अपनी झूठी शान और मर्यादा के लिए इनका त्याग कर दिया जाता है।जब जन्म देने वाले माता-पिता ही इनके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे तो इस समाज से कैसी अपेक्षा रखी जा सकती है?इसी सामाजिक भय के कारण पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा के पात्र हरिंद्र शाह और बंदना अपने मझले पुत्र विनोद को किन्नरों को सौंपने के लिए विवश हो जाते है।मानव जीवन का सबसे खूबसूरत दौर बाल्यावस्था का होता है किन्तु किन्नरों को बालपन में ही अपने परिवार से अलग होना पड़ता है और अपनों से विलग होना इनके जीवन को दिशाहीन बना देता है।इनका बचपन भीख मांगकर सड़कों पर बीतता है।जवानी लोगों के द्वारा शोषित होकर गुजरती है।वृद्धावस्था में लाचारी मात्र शेष रह जाती है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

किसी परिवार में किन्नर संतान के रूप जन्म लेने पर उसे जीनविकृति से नहीं बल्कि उसके पिता के पुरुषत्व और परिवार की मर्यादा से जोड़कर देखा जाता है जिस कारण अधिकतर मामलों में ऐसे बच्चों को पिता की तरफ से बहिष्कार का सामना करना पड़ता है।महेन्द्र भीष्म के उपन्यास 'मैं पायल' की पायल हो या 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास की सिमरन दोनों को ही पिता की तरफ से अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ता है।यह पुरुषप्रधान समाज पुरुषवादी दंभ के कारण अपनी किन्नर संतान को स्वीकार नहीं कर पाता और उसे अपने वंश के लिए कलंक मानता है।'मैं पायल' उपन्यास में पायल के पिता पायल के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहते है–"ये जुगनी।हम क्षत्रिय वंश में कलंक हुई हैं,साली हिजड़ा है...।"2

जन्म से ही किन्नरों के प्रति पारिवारिक और सामाजिक भेदभाव आरंभ हो जाता है और यह संपूर्ण जीवन जारी रहता है।एक किन्नर का प्रभाव केवल उसके जीवन पर ही नहीं बल्कि उसके परिजनों के जीवन पर भी पड़ता है।किसी भी किन्नर संतान को स्वीकार करने वाले परिवार को सामाजिक उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।नीना शर्मा जी द्वारा रचित उपन्यास 'मेरे हिस्से की धूप' में मोनी के कारण उसकी बहन के विवाह में रुकावट आती है, उसकी भाभी काव्या भी उसे स्वीकार नहीं करती और उसके भाई को लेकर अलग हो जाती है।काव्या मोनी को अपमानित करते हुए वह कहती है–"ये हिजड़ा मेरी ननद है...।छि...।"3

हमारे समाज ने किन्नरों को मनोरंजन का साधन मात्र समझ लिया है जिनका कार्य किसी मांगलिक प्रसंग में आकर बधाई देना और नेग लेने तक सीमित कर दिया गया है।इन शुभ प्रसंगों पर भी इन्हें हिकारत भरी दृष्टि से ही देखा जाता है।शीघ्र अतिशीघ्र नेग देकर इनसे छुटकारा पाने का प्रयास किया जाता है।यह समाज इनके साये से भी दूर भागता है,इनके साथ अछूत जैसा व्यवहार करता है।सामाजिक उपहास और पारिवारिक प्रताड़ना के कारण भी किन्नर अपने परिवार और संबंधों को त्यागने के लिए बाध्य हो जाते है।अपनों के द्वारा मिल रही प्रताड़ना से परेशान होकर घर छोड़ने का निर्णय ले लेते है और इसके अतिरिक्त इनके पास अन्य कोई विकल्प शेष नहीं रहता।'मैं पायल' उपन्यास की पायल अपने पिता के दुर्व्यवहार से तंग आकर घर छोड़कर भाग जाती है।'मेरे हिस्से की धूप' उपन्यास में समाज के दोहरे चरित्र को स्पष्ट करते हुए लेखिका लिखती है–"इस समाज में कपूत बेटे के लिए परिवार में जगह है नाकारा बेटी के लिए जगह है लेकिन हिजड़े के लिए कोई जगह नहीं है।"4

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है।समाज की स्वीकृति के बिना व्यक्ति की पहचान नहीं रह जाती।समाज ने सदैव ही लैंगिक दृष्टि से केवल दो वर्ग को ही अपनी मान्यता प्रदान की है-स्त्री और पुरुष।सामाजिक अस्वीकृति किन्नर समुदाय के जीवन की सबसे बड़ी समस्या है।किन्नर समुदाय की सामाजिक समस्या का वर्णन करते हुए डॉ.मोनिका शर्मा जी अपने उपन्यास 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' में लिखती है–"किन्नर पैदा तो हो जाता है उसको रखना सबसे बड़ी समस्या है समाज की।इस समस्या को बड़ी बीमारी बनाने वाले कुछ तो रिश्तेदार और कुछ पड़ोसी ही होते है।"5

किन्नर समुदाय के लोग सिर्फ समाज में नर-नारी के समान अपनी हिस्सेदारी चाहते है।समाज की अस्वीकृति के कारण ही ये अपने अस्तित्व के लिए आज तक संघर्ष कर रहे है।विस्थापन के पश्चात निवास की समस्या उपस्थित होती है।अधिकतर किन्नर अपने समुदाय में शामिल होकर गुरु की शरण में चले जाते है।कभी स्वेछानुसार तो कभी जबरन।मकान के किरायेदार जल्दी इन्हें मकान किराये पर देते नहीं है जिसके कारण इन्हें समाज की मुख्यधारा से दूर गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

किन्नर समुदाय के लोगों को 2014 के पूर्व तक विद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने के लिए स्त्री या पुरुष बनना पड़ता था क्योंकि तृतीय लिंग के लिए कोई कॉलम ही नहीं था।किन्नर बच्चे के माता-पिता सर्वप्रथम तो उन्हें विद्यालय भेजने से कतराते है क्योंकि उनका भेद खुलने पर वे समाज में उपहास के पात्र बन कर रह जाते है साथ ही उन्हें लोगों के अमानवीय व्यवहार का भी सामना करना पड़ता है।किन्नर बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करना चाहते है किन्तु यह समाज इनके वास्तविक रूप को स्वीकार कर शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति प्रदान नहीं करता।सामाजिक अस्वीकृति के कारण प्रतिभाशाली होने के बावजूद ये अपने सपने पूरे नहीं कर पाते।[3,4]

सामाजिक अस्वीकृति ने न केवल शिक्षा के अधिकार से वंचित किया अपितु रोजगार के मार्ग भी बंद कर दिये।सामाजिक अवहेलना ने इन्हें एक अलग समुदाय से जुड़ने के लिए विवश किया।भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में जहाँ न तो इन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त थी और न ही कानूनी मान्यता ऐसे में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना कितना कठिन रहा होगा इसकी कल्पना करना भी कठिन है।शिक्षा से वंचित एवं योग्य कौशल के अभाव के कारण रोजगार प्राप्त करने में इन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।रोजगार के अभाव के कारण इन्हें बधाई मांगने के पेशे को स्वीकार करना पड़ता है।ये लोगों के शुभ प्रसंग के अवसरों पर बधाई मांगने जाते है।कई बार अपनी पहचान गुप्त रखकर रोजगार पा तो लेते है लेकिन सहकर्मियों के द्वारा दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है।किन्नरों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है।आवश्यकता है तो विभिन्न संगठनों द्वारा इनके हित के लिए आगे आने की जिससे ये भी समाज में सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सके।

रोजगार के अन्य विकल्प न होने के कारण किन्नर वेश्यावृत्ति से जुड़ने के लिए मजबूर हो जाते है।वेश्यावृत्ति में सक्रिय होने के कारण संक्रामक यौन रोगों के शिकार भी हो जाते है।कई बार एड्स जैसी गंभीर बीमारी के कारण अपनी जान गवा बैठते है।इनकी इस दयनीय स्थिति के पीछे किसी हद तक हम भी जिम्मेदार है।'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' की किन्नर सायरा और 'मेरे हिस्से की धूप' उपन्यास की बबली भी वेश्यावृत्ति में लिप्त रहती है।सामाजिक असुरक्षा के कारण इनका यौन शोषण भी

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

सर्वाधिक होता है।कभी अपने पड़ोसी, कभी रिश्तेदार और कभी अपने सहकर्मी द्वारा यौन शोषण के शिकार होते है।अफ़सोस तो इस बात का है कि इनके साथ होते इस अपराध के विरोध में कोई आवाज तक नहीं उठाता।'मैं पायल' उपन्यास में पायल के साथ एक सिपाही ही यौन शोषण करने का प्रयास करता है।किन्नरों के साथ होते यौन शोषण का जिक्र 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में भी किया गया है–"सबसे ज्यादा यौन शोषण हमारा (यानि किन्नरों का ही होता है।"6

"कैसी-कैसी मानसिकता के लोग हैं, धिक्कार है ऐसे समाज पर,जहाँ पर ऐसे इज्जतदार लोग रहते हैं जो एक हिजड़े को भी हवस मिटाने का साधन मात्र समझते हैं।" 7

किन्नर समुदाय की नेग वसूली की समस्या का भी जिक्र किया गया है।ऐसी कई घटनाएं सुनने और देखने में आती है जहां किन्नर नेग लेते वक्त सामने वाले व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को भी नजरअंदाज कर देते है।स्वेच्छानुसार नेग प्राप्त न होने पर मर्यादा की सीमा लांघ जाते है।प्राचीन मान्यता के कारण लोग इनके श्राप से भी डरते है और विवशतावश उनकी मांग की पूर्ति करते है।कई बार यह समस्या विवाद और लड़ाई-झगड़े का कारण बन जाती है।परिवार वाले या तो इनकी इच्छा की पूर्ति करते है या इनके द्वारा अपमानित होते है।कमाने का अच्छा और सरल माध्यम होने के कारण कई नकली किन्नर पैदा हो गए है।जिसके कारण इनके बीच झगड़े इतने अधिक बढ़ गए है कि बात हत्या तक पहुँच जाती है।अब बात करे कि क्या वास्तविक किन्नर ऐसा करते है?'दरमियाना' उपन्यास में सुभाष अखिल जी लिखते है-"तारा ने बनारसी पत्तों का रस चूस कर एक और थूका और घुटनों पर हाथ रख कर खड़ी हो गयी,"अरी ओ!मेरे खसम की दिल लगी सौत!देती है कि दिखाऊँ जलवा?"8

किन्तु एक स्थान पर यहीं तारा अशुए की माँ की घर की आर्थिक स्थिति को भांपते हुए बच्चे को अपना आशीर्वाद देकर लौट जाती है–"छोटे की बलैयाँ लीं और कहने लगी, "सगन तो सगन होता है बहना! फ़िर एक क्या इक्यावन क्या?...जल्दी-से बड़ा आदमी बन जाये मेरा राजा बेटा...पढ़े-लिखे-कमाए, फिर चाँद-सी दुल्हनिया लाये, मेरी बहना के लिए।"इसके बाद वह माँ को समझाते हुए कहती है-"बस री बहना!अब और मत ना बनइओ, नहीं तो सुतरे पालने मुश्किल हो जाते है।"9

किन्नरों का आर्थिक शोषण भी किया जाता है।लोग इनसे केवल अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु संबंध रखते है।'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में किन्नर सिमरन को तब तक घर में रखा जाता है जब तक वह पैसे लाकर देती है जैसे ही उसकी नौकरी छूट जाती है उसे उसके पिता और भाई घर से बाहर निकाल देते है।सिमरन की माँ को जब भी धन की आवश्यकता होती उन्हें की याद आती है।सिमरन कहती है–"माँ का और मेरा सिर्फ पैसे का रिश्ता ही बचा था...जब उसको जरूरत पड़ती तो फोन कर दिया वर्ना कौन सिमरन, कोई नहीं जानता।"10

वहीं दूसरी तरफ अपने समुदाय द्वारा भी किन्नरों का आर्थिक शोषण किया जाता है।सिमरन अपने गुरुओं के द्वारा आर्थिक शोषण का शिकार होती है।किन्नर समुदाय की इस समस्या को प्रस्तुत करते हुए डॉ.मोनिका शर्मा जी लिखती है–"हम किन्नर पाई-पाई को तरसते हैं, आर्थिक रूप से भी शोषण होता है।जब तक पैसे पास होते हैं तब तक हर रिश्ता हमसे जुड़ना चाहता है।जब रुपया खत्म हो जाता है तब तक ज़िंदगी तमाशा बन जाती है कोई भी आकर हमें गाली गलौच देकर निकल सकता है।"11

किन्नर समुदाय के बीच परस्पर संघर्ष देखने को मिलता है।किन्नर समुदाय में शामिल होने के बाद किन्नरों को अपने किन्नर गुरु के मुताबिक जीवन का निर्वाह करना होता है।वे अपने गुरु की अनुमति के बिना कोई कार्य नहीं कर सकते।'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' में गुरु चंपा और बेला तथा 'मैं पायल उपन्यास' में किन्नर मोना के बीच वर्चस्व को लेकर संघर्ष देखा जा सकता है।कई बार असली और नकली किन्नरों के मध्य संघर्ष की स्थिति बन जाती है।ये नकली किन्नर अपने लोभवश किसी किन्नर की हत्या करने से भी पीछे नहीं हटते है।

किन्नरों को बालपन से ही परिवारिक और सामाजिक बहिष्कार, तिरस्कार यातनाओं को बर्दाश्त करना पड़ता है।दर-ब-दर की ठोकरे खाकर भीख मांगकर जीवन यापन करना पड़ता है।किन्नरों को तृतीय लिंग की श्रेणी में रख देने मात्र से उनके जीवन की समस्याओं अंत नहीं होगा।किन्नरों को समाज में समानता का अधिकार प्राप्त हो जिससे ये अन्य नागरिकों की तरह सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।आज किन्नरों को अपने अधिकार प्राप्त होने लगे है किन्तु वे अपने संपूर्ण अधिकार से वंचित है।समकालीन साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से किन्नर समुदाय को समाज की मुख्यधारा में लाने का सराहनीय सफल प्रयास कर रहे है।[5,6]

विचार-विमर्श

किन्नर समाज के लोगों को समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु इनकी समस्याओं और स्थिति आदि पर गंभीरता से चर्चा एवं जनमानस में इनसे सम्बन्धी चेतना विकसित किये जाने की आवश्यकता है जिसका आगाज दिखाई पड़ने लगा है | हिंदी साहित्य जगत द्वारा पिछले वर्षों से छेड़ी गयी जिरह के फलस्वरूप इस समाज से सम्बंधित मुद्दों को हाथों हाथ लिया गया है | इस वर्ग के लोगों की समस्याओं, किन्नर जीवन के संघर्ष पर काफी कुछ लिखने, पढ़ने तथा उनके जीवन को समझने का साहस किया जा रहा है जो समाज में उनकी स्वीकार्यता को बल देगा |

इस समुदाय की व्यथा को विभिन्न उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से लोगों के बीच उजागर किया जा रहा है जो इनके संघर्ष में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहायक सिद्ध हो रहा है | महेंद्र भीष्म, प्रदीप सौरभ जैसे लेखकों के अतिरिक्त इस समुदाय से जुड़े

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

लोग भी अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से समाज के समक्ष अपनी बात को रख रहे हैं | लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' और मनोबी बंद्योपाध्याय की प्रकाशित आत्मकथा 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' इसी क्रम में एक साहसिक कदम हैं |

मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

इन दोनों आत्मकथाओं की विशिष्ट बात यह है कि इनमें बड़ी ही बेबाकी के साथ अपने जीवन की सच्चाइयों को अभिव्यक्त किया गया है | 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' के पात्र की कथा जहाँ एक ओर इस परित्यक्त समुदाय के जीवन संघर्षों से हमें रूबरू कराती है वहीँ दूसरी ओर एक विजयी सेनानी की भांति कई ऐसे आदर्श प्रस्तुत करती है, जो इनके अपने समुदाय के लिए एक आदर्श पदचिह्न बनता है | इसका पात्र किन्नर के परंपरागत जीवन शैली को नकारते हुए समाज की मुख्य धारा के लोगों की किन्नरों के प्रति हिकारत की भावना का प्रतिकार करता हुआ, संघर्षमय जीवन के साथ , अवनति से उन्नति की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता है । सामाजिक तिरस्कार के बावजूद वह अपने असीम धैर्य के साथ शिक्षा ग्रहण कर एक अलग पहचान बनाता है तथा इस समाज के उत्थान को अपना दायित्व मानते हुए अपनी संस्था के माध्यम से उनके जीवन में बदलाव लाने हेतु कई अभियान भी चलाता है |

पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन

'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' का पात्र सोमनाथ अपने पुरुष शरीर की कैद से आजादी को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लेता है | हालाँकि सोमनाथ के मनोबी बनने की तीव्र आकांक्षा की उत्पत्ति ही अपने-आप में कई प्रश्न खड़े करते हैं | आखिर सोमनाथ में इस बदलाव की तीव्र उत्कंठा का मूल कारण क्या है ? क्यों इन जैसे लोगों को एक पूर्ण स्त्री अथवा एक पूर्ण पुरुष बनने की चाह हो ? उत्तर बहुत ही स्पष्टत एवं सरल है | उत्तर है समाज में एक पूर्ण स्त्री अथवा एक पूर्ण पुरुष के रूप में समानता का अधिकार, स्वीकार्यता एवं उनके समकक्ष एक जीवन जीने की अपेक्षा | यदि समाज उन्हें उनके उसी रूप में वो सम्मान, अधिकार आदि प्रदान करने में सक्षम हो जाये तो शायद उनके मानस में इस द्वंद्व की उत्पत्ति से निजात पाई जा सकती है | हर क्षण दूसरों से भिन्न, उपेक्षित होने की मानसिक पीड़ा से उन्हें मुक्ति दी जा सकती है | शून्य से शिखर तक पहुँचने के इस अभियान में उसे कई शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं तथा सामाजिक तिरस्कार का सामना करना पड़ता है | ये दोनों आत्मकथाएं जीवन संघर्ष के विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए, उनके संघर्ष, पीड़ा और अंतत: सफलता का चित्रण करती हैं |[7,8]

किन्नर जीवन में परिवार की भूमिका

किन्नर जीवन का सर्वप्रथम संघर्ष प्रारंभ होता है उनके अपने परिवार से | समाज तो बहुत बाद में आता है | लोगों का यह भययुक्त प्रश्न "समाज क्या कहेगा ?" उनके अपने परिवार द्वारा परित्याग एवं परिहास का कारण बनता है | अक्सर हम पाएंगे की ऐसे लोगों को उनका परिवार समाज में अपनी इज्जत खो जाने के भय से उन्हें बचपन में ही अपने हाल पर जीने के लिए छोड़ देता है |

हमारे समाज में आज भी पुत्र प्राप्ति की कामना बहुत बलवती है और इसे बेहद ही गौरव की बात माना जाता है | अब आप कल्पना कर सकते हैं कि जब हमारे समाज में एक पुरुष की तुलना में स्त्री को ही दोयम माना जाता हो तो फिर एक ऐसा जीव जो न तो स्त्री है और न ही पुरुष, उसकी क्या दशा होती होगी | हालाँकि ये दोनों इस मामले में खुशकिस्मत रहे हैं कि उन्हें जीवन के प्रारंभिक अवस्था में ही अपने परिवार से परित्यक्त नहीं होना पड़ा जिसके कारण उन्हें एक अच्छी शुरुआत मिली और वे एक ऐसे मुकाम तक पहुँच पाए जो उनके जैसों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें |

लक्ष्मी को कभी भी अपने परिवार से तिरस्कार का सामना नहीं करना पड़ा | लक्ष्मी और उसके परिवार की एक दूसरे के प्रति स्वीकार्यता हमारे समाज के समक्ष एक नया उदाहरण प्रस्तुत करती है । उसके पिता कहते हैं –

"अपने ही बेटे को मैं घर से बाहर क्यूँ निकालूं ? मैं बाप हूँ उसका , मुझ पर जिम्मेदारी है उसकी | और ऐसा किसी के भी घर में हो सकता है | ऐसे लड़कों को घर से बाहर निकालकर क्या मिलेगा ? उनके सामने तो हम फिर भीख मांगने के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ते हैं | "

परिणाम

मनोबी भी अपनी आत्मकथा में लिखती हैं कि जब वे अपने पी.एच.डी के कार्य के दौरान उनके जैसे लोगों की शैली को करीब से जानने की जिज्ञासा लिए जब वे रानाघाट के हिजड़ों के साथ जुडी तो उन्होंने पाया कि भारी संख्या में ट्रांसजेंडर अपनी जीविका के लिए वैश्यावृति से जुड़ने के लिए विवश हैं | और उनमें से काफी तो एड्स का शिकार तक हो चुके हैं | उन लोगों की तुलना में स्वयं की बेहद ही अच्छी स्थिति का श्रेय अपने परिवार को देते हुए वे कहती है –

"मैं जगदीश जैसे ट्रांसजेंडर लोगों की तुलना में, स्वयं को बहुत हद तक सौभाग्यशाली मानती हूँ | अगर मेरे परिवार ने मेरे इस विचित्र रूप के बावजूद मुझे सहारा न दिया होता, मुझ पर पढ़ने का दबाव न रखा होता तो भगवान जाने मेरे साथ क्या हुआ होता |"

पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

ये दोनों ही आत्मकथाएं हमारे लिए एक सीख हैं कि इस समुदाय के लोग शारीरिक अथवा मानसिक दृष्टी से किसी भी आम स्त्री अथवा पुरुष से कतई भी भिन्न नहीं हैं | यदि इन्हें भी पारिवारिक अथवा सामाजिक सहयोग मिले तो ये भी किसी आम इंसान की ही भांति हमारे मध्य एक आम जीवन जी सकते हैं |

किन्नर जीवन और सामाजिक तिरस्कार

लक्ष्मी तथा मनोबी को अपने जीवन के प्रारंभिक अवस्था में पारिवारिक सहयोग भले ही प्राप्त हुआ हो, परन्तु सामाजिक तिरस्कार का सामना उन्हें भी करना पड़ा | परिवार की आकाँक्षाओं तथा अपनी अन्य लोगों से भिन्नता का उनके मानस पर इतना दबाव होता है कि वे अलग ही स्तर के द्वंद्व से गुजरने लगते हैं | उसके आस-पास के लोग उन्हें उस रूपमें स्वीकार नहीं कर पाते | उदाहरण के तौर पर जब लक्ष्मी ने अपने हिजड़ा बनने की बात अपने दोस्तों से बताई तो बहुत से मित्रों ने उससे बात करना ही छोड़ दिया | इस विषय में उसका मानना है कि –

"लीक छोड़कर चलने पर इससे अलग और क्या हो सकता था ? मेरे दोस्त भी मुझे समझ नहीं सकते , यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा , पर मैं निराश नहीं हुई । चुनी हुई राह से पलट जाऊँ, ऐसा तो मुझे बिलकुल भी नहीं लगा । "
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

सोमनाथ को लगभग छह साल की उम्र में ही अपने स्त्रीत्व गुण का आभास होने लगा था और वे अपनी बहनों के कपड़े बड़े ही चाव से पहनते तथा अपनी माँ के श्रृंगार प्रसाधनों का इस्तेमाल भी करते जिसे उनका बचपना समझ भुला दिया जाता | उनकी स्त्रियोचित कोमल शारीरिक संरचना को विरासत में मिला सौंदर्य समझा जाता | अपने स्त्रीत्व को लेकर उनका आत्मविश्वास उनके पिता और परिवार के लिए उपहास का विषय बनता जा रहा था |

पांचवी कक्षा में आते-आते सोमनाथ नौजवानों के प्रति आकर्षित होने लगे थे | सोमनाथ के मन में अपने पुरुष होने को लेकर इतनी कुंठा थी कि उसे अपने जननांग से नफरत होने लगी | यह तो उनकी उस मनोवैज्ञानिक द्वंद्व का प्रारंभ मात्र था | सोमनाथ में आने वाले बदलाव आस-पास के लोगों से भी छिपे नहीं थे जिसका खामियाजा परिवार के लोगों को तानाकसी सुनकर भुगतना पड़ता था |[9]

किन्नर समाज के उत्थान में शिक्षा की भूमिका

किसी भी आम व्यकित की ही भांति जीवन उत्थान के लिए इस समुदाय के लिए भी शिक्षा एक बहुत ही बड़ा हथियार है | सोमनाथ उर्फ़ मनोबी अपने जीवन के प्रारंभिक काल में ही जान गयी थी कि उनके इस बदलाव की ढाल मात्र शिक्षा ही है | वे कहती हैं –

" किसी तरह, मैंने अपने भीतर जागने वाली उस लैंगिकता को अपनी बुध्धि पर हावी नहीं होने दिया ; .... मुझे एहसास हो गया था कि केवल इसी तरह से, मैं असमानता की इस जंग को जीत सकती हूँ |"
पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन

अपने अस्तित्व को समाज के भय से नकारते हुए जिए जाना वास्तव में बहुत ही कठिन होता है | अतः उन्होंने अपनी शिक्षा के साथ किसी भी प्रकार समझौता नहीं किया | उन्होंने बंगला साहित्य से पोस्ट ग्रेजुएशन के उपरांत पहले एम.फिल और फिर बाद में पीएचडी की उपाधि हासिल की साथ ही शिक्षा को ही व्यवसाय के रूप में चुना | मनोबी ने रानाघाट के हिजड़ा घराने की मुखिया 'श्यामोली' से प्रभावित होकर 'अंतहीन अंतरीन प्रोसितोबोर्तिका' नामक उपन्यास लिखा जो पहले तो विभिन्न एपिसोड्स में उन्ही के द्वारा चलायी जाने वाली "अबोमानोब" नामक भारत की पहली ट्रांसजेंडर पत्रिका में प्रकाशित हुआ और बाद में एक पूर्ण उपन्यास के रूप में सामने आया |
उन्होंने पहले पत्रकारिता की ओर भी अपना रुख किया जिस दौरान उनके सैकड़ों लेख विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुए | उन्होंने अपने करियर का प्रारंभ पहले स्कूल और फिर बाद मे झाड़ग्राम में कोलेज में लेक्चरर और अब वे नैहाटी के ही एक महिला कॉलेज में प्रिंसिपल के पद पर आसीन हैं | उनकी यह उपलब्धियां और इससे अर्जित की गयी समाज में प्रसिध्धि आर्थिक एवं भावनात्मक दृष्टी से उनका अपना लक्ष्य जो कि अपनी स्त्रीत्व की पहचान को कायम रखना था, संघर्ष के साथ ही सही, उसे पाने में सहायक रही हैं |

इसी क्रम में देखें तो लक्ष्मी भी सुशिक्षित और आत्मनिर्भर इन्सान है | लक्ष्मी स्वयं पढ़ी लिखी हैं तथा उसी के अनुरूप वह अपने किन्नर भाइयों के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानती हैं । वह कहती हैं –

"मुझे प्रोग्रेसिव् हिजड़ा होना है ...और सिर्फ मैं ही नहीं अपनी पूरी कम्युनिटी को मुझे प्रोग्रेसिव बनाना है .....।"
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

वे अपने और अपने समुदाय के हित के लिए लीक से हटकर चलने में जरा भी संकोच या परवाह नहीं करती | लक्ष्मी अपने कम्युनिटी के हित के लिए बिना डरे और बिना किसी के साथ के ही लड़ना आरम्भ करती हैं | जहाँ कही भी उसे हिजड़ों के हित के लिए खड़ा होना पड़ा, वहाँ वह अडिग रहीं | इस प्रकार लक्ष्मी एक उदहारण हैं कि यदि इस समुदाय के मध्य भी यदि शिक्षा की व्यापक पैठ हो तो उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाये जा सकते हैं |

इस समुदाय की मौजूदा परिस्थिति के लिए हमारे समाज में परिपक्वता का आभाव जितना जिम्मेदार है उतना इस समुदाय का स्वयं को समाज की मुख्य धरा से अलग-थलग रखना भी | यह समुदाय भी समाज की मुख्य धारा से सहज नहीं है | ऐसे ही एक बार जब लक्ष्मी को एड्स की स्थिति के विषय में चर्चा हेतु एक मीटिंग में आमंत्रित किया जाता है तब उसकी गुरु ऐसे किसी भी समारोह में शामिल होने का विरोध करती हुई कहती हैं –
"क्यों जाना चाहिए वहाँ ....क्या जरुरत है इतना सामने आने की |"
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

किन्तु लक्ष्मी का मानना था कि वे लोग जितना समाज से हिले मिलेंगे उतना ही समाज भी उन्हें जानने पहचानने लगेगा | लक्ष्मी अपने गुरु लता के मना करने पर भी अपने समाज के हित के लिए उस मीटिंग में शामिल होती है | इस तरह वह किन्नरों को समाज से अलग रहने के नियम का विरोध करती है | हमारे समाज में किन्नरों को देखने का नजरिया बेहद अमानवीय रहा है | ऐसा लगता है मानो किन्नर होना बहुत बड़ा अभिशाप हो, वे इन्सान न होकर कोई जानवर हों | इसके लिए लक्ष्मी अपने समाज को भी कुछ हद तक जिम्मेदार मानते हुए कहती है –

"इन हिजड़ों से मैं बार-बार कहती हूँ , समाज का हमें देखने का जो नजरिया है, उसके लिए हम भी जिम्मेदार हैं | समाज में घुल-मिल जाओ, उनसे बात करो | फिर देखो, ये नजरिया बदलता है या नहीं |"
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

लक्ष्मी का यह नजरिया साबित करता है की इस समाज के उत्थान हेतु यह आवश्यक है कि उनकी दशा में सुधार समाज और उन जैसे लोगों के परस्पर संवाद से ही संभव है |

यौन शोषण का दंश झेलता किन्नर समाज
सोमनाथ से मनोबी बनने का सफ़रनामा समाज के चेहरे के दोगलेपन चरित्र को उजागर करता है | एक ओर समाज के लोग जो उन्हें तिरस्कृत करते हैं, हिजड़ा आदि कहकर अपमानित करते हैं, वही उनका यौन शोषण कर अपनी काम इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए लालायित रहते हैं | सोमनाथ का कजिन जो अक्सर उसके पिता को सोमनाथ के लिंगदोष को लेकर अपमानित किया करता था, वही उसे अकेले पाकर उसका बलात्कार किया करता था | सोमनाथ ने अपने संबंधों को कभी भी एक समलैंगिक सम्बन्ध नहीं माना है | उन संबंधों में उनकी तरफ से उनका स्त्री सुलभ प्रेम का भाव ही रहा है | परन्तु लोगों ने इसे समलैंगिगकता के खांचे में लाकर फिट कर दिया | उन्होंने इसे स्त्री की भावना का अपमान माना और समाज पर प्रश्नचिहन लगाते हुए कहा कि-
"आप उन ....पुरुषों को क्या कहेंगे जो छोटे बच्चों का यौन शोषण करते हैं ? क्या संसार उन्हें भी समलैंगिक कहता है ? अधिकतर तो ऐसा नहीं होता | तो ट्रांसजेंडर लोगों को झट से उन खांचों में क्यों डाल दिया जाता है, जो समाज को सुविधाजनक प्रतीत होते हैं ?"
पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन

उनके जीवन में यौन संबंधों की बहुतायता का एक मनोवैज्ञानिक कारण यह भी माना जा सकता है कि वे निरंतर अपने अधूरेपन से जूझती हुयी यही कामना करती रहीं की लोग भी उन्हें उन्हीं की भांति एक स्त्री के रूप में ही स्वीकार करें | एक स्त्री की भांति उन्हें अपने साथी पुरुष से सच्चे प्रेम के साथ-साथ पारिवारिक सुरक्षा की तलाश रही है | परन्तु उन्हें अपने हर प्रेमी से निराशा ही मिली फिर चाहे उनके स्कूल के प्रेमी 'श्वेत' और 'श्याम' हों या फिर कॉलेज के दिनों के प्रेमी सागर बोस आदि | कईयों के लिए तो वह मात्र एक इस्तेमाल की जाने वाली वस्तु मात्र थी |

व्यावसायिक जीवन में कठिनाइयाँ झेलते किन्नर
सोमनाथ को अपने प्रोफेशनल करियर में भी काफी कठिनाइयों और उपेक्षा का सामना करना पड़ा | छात्र संघ के प्रभावी, रुढ़िवादी और निकृष्ट सोच रखने वाले सहकर्मी एवं छात्र अक्सर उनके खिलाफ साजिश करते | उन्हें शराबी एवं ख़राब किस्म का व्यक्ति घोषित कर बदनाम करके उनके निलंबन का प्रपंच रचते | इस षड्यंत्र के खिलाफ वे मजबूती से लड़ीं और जीत के साथ लौटीं |

इसी दौरान अपने सपाट शरीर और एक नारी मन के विरोधाभासी यौन अंग से तंग आ चुकी मनोबी ने अपने सेक्स को बदलने की प्रक्रिया का आरम्भ कर दिया था जिसके लिए वे चिकित्सक की देखरेख में होरमोंस लेना आरम्भ कर चुकी थीं | हालाँकि सर्जरी के

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

जरिये स्त्री काया पाने की ललक को छोड़ देले की सलाह उनके कई हितैसियों ने दी किन्तु वे अपने फैसले पर अडिग रहीं और अंतत सफल रहीं | यही तो उनका लक्ष्य था उनका, अपनी पूर्णता को पा लेना जिसमें वह सफल रहीं ||[10]

इसी प्रकार लक्ष्मी भी अपने जीवन का वह प्रसंग साझा करती हैं जो समाज के कुछ तबके का उन जैसे लोगों के प्रति संवेदनहीनता और अमानवीय व्यवहार को दिखाता है | उन्हें बस छेड़े जाने और शोषित किये जाने वाला जीव समझता है | जब लक्ष्मी डांस सिखाने के लिए जाती हैं तब कई लड़के उनके कमरे में घुस आते हैं और उनके साथ जबरजस्ती करने का प्रयास करते हैं | लेकिन वह किसी प्रकार वहाँ से भाग निकलती है |

प्रायः ऐसे हादसे लोगों को निराशा की गर्त में धकेल देते हैं और इंसान इसे अपनी नियति मान निरंतर शोषित होता रहता है | परन्तु यह वाकया उसके जीवन को एक नयी दिशा तथा समाज के उस तबके से लड़ने की ताकत प्रदान करता है | वह सोचती है –

"मुझे प्रतिकार करना सीखना होगा | मैंने मन-ही-मन- लड़ने की तैयारी की |"
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

लक्ष्मी स्वयं की ही भांति अपने जैसेअन्य लोगों को भी समाज द्वारा किये जाने वाले दुर्व्यहार का प्रतिकार करने के लिए प्रेरित करती है |

रुढियों का प्रतिकार करता किन्नर समाज
लक्ष्मी जब किन्नर समाज को अपनाती है उसके पश्चात वह उस समाज की भी कई मान्यताओं एवं रुढियों का प्रतिकार करती है | उसके खिलाफ संघर्ष करती है उन्हें उचित सामाजिक न्याय दिलाने के लिए,उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए | किन्नरों में यह मान्यता है कि एक बार जो भी इस समाज का हिस्सा बन जाता है, वह अपने परिवार से सारे रिश्ते तोड़ देता है या उनका परित्याग कर देता है । उनके समाज के रसुखदार गद्दियों के स्वामी उन्हें परिवार से मेल-जोल की अनुमति नहीं देते हैं | लक्ष्मी की गुरु भी उसे हिदायत देते हुए कहती है –

"घर मत रहो, यहाँ हम हिजड़ों के साथ रहो | हमें जो बातें नहीं करनी चाहिए, वो बातें वहाँ घर में तुम्हें करनी पड़ती हैं | ...हम ना स्त्री हैं, ना पुरुष .....स्त्री पुरुषों के समाज के नहीं हैं हम | क्यों रहना है फिर उनके साथ ? "
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

परन्तु लक्ष्मी इसका एक अपवाद है | लक्ष्मी अपने गुरु की बात को तवज्जो न देते हुए लगातार अपने परिवार के संपर्क में बनी रहती है |इस समुदाय के लोग भिक्षावृत्ति या बधाई लेने के काम के अभाव में देह व्यापार में लिप्त हो जाते हैं जिसके कारण वे एड्स जैसी गंभीर बिमारियों से ग्रसित हो जाते हैं और एक हिजड़ा होने के कारण उनके स्वास्थ्य की भी परवाह नहीं करता | अतः लक्ष्मी हिजड़ों द्वारा हिजड़ों के लिए 'दाई वेलफेयर सोसाइटी' नामक संस्था की स्थापना कर उनके हित में कार्य का प्रारंभ करती है | वह कहती है –

"बस्ती के हिजड़ों को अच्छा लगता था | उनके स्वास्थ्य के बारे में , उनकी जिंदगी के बारे में कोई फिक्र कर रहा है , यही उनके लिए काफी बड़ी बात थी | पर हिजड़ा कम्युनिटी के मुखिया , नायकों का इसको लेकर विरोध था | ....पर खुद काम करने वाले हिजड़े अब हमें बहुत अच्छा रिस्पांस देने लगे थे |"
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी

लक्ष्मी 'दाई वेलफेयर सोसाइटी' की पहली अध्यक्षा बनी | उसकी संस्था इस समुदाय के लिए बहुत से काम करती थी | उनकी समस्याओं और उनकी पीड़ाओं को समाज के सामने रखती थी | सामाजिक काम के क्षेत्र में उनकी सक्रियता के कारण सभी उनसे आदर के साथ पेश आते थे | न कोई छेड़खानी करता और न ही कोई उन्हें नजरअंदाज करता |
लक्ष्मी का मानना है जो सम्मान उसे मिल रहा था, वही सम्मान उसके जैसे अन्य लोगों को भी मिलना चाहिए | लक्ष्मी केवल अपने ही विकास, अपनी ही उन्नति की चिंता नहीं करती अपितु अपने संपूर्ण समाज के लिए संघर्ष करती है, मात्र स्वयं ही दुनिया की नज़रों में ऊँचा उठने की आशा नहीं रखती बल्कि अपने जैसे सभी लोगों को वही मान-सम्मान और ऊंचाई दिलाने की चाह रखती है | लक्ष्मी अपने जैसों को स्वयं ही अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है तथा देह व्यापार से जुड़े हिजड़ों की स्थिति सुधारने के लिए वह राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग सेमिनारों में, वोर्क्शोप्स आदि में हिस्सा लेती है | इसके लिए वह कभी यूरोप गयी तो कभी टोरंटो | उन्हें यूरोप में एच .आई.वी. एड्स पर होने वाली मीटिंग के लिए यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली स्पेशल सेशंस में भी बुलाया गया और वह गयी |

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

मौजूदा समय में हो रहे सामाजिक बदलावों के साथ-साथ इस समाज के लोगों के अपने संघर्ष के परिणामस्वरूप उन्हें धीरे-धीर वे हक़ मिलने लगे हैं जिनके वे हक़दार हैं | इसके लिए किन्नर समाज ने बहुत कुछ सहा है | उन्हें कानूनी पहचान भी मिलने लगी है | इस प्रकार इनके प्रयासों से ही आज समाज का इनके प्रति नजरिया बदल रहा है | समाज से मिलने वाला सम्मान, कानून द्वारा मिलने वाले अधिकार, स्वयं इनके द्वारा भी इनके समुदाय की गलत मान्यताओं, रुढियों के निरंतर प्रतिकार के फलस्वरूप हमें आशान्वित होना चाहिए की आने वाले समय में इस समुदाय की स्थिति मे और भी सुधार होंगे |

निष्कर्ष

हमेशा से समाज किन्नर समाज को भेदभाव की दृष्टि से देखता आया है। समाज का एक अभिन्न हिस्सा होने के बावजूद भी इस वर्ग को अपने ही परिवार एवं समाज में कोई महत्व नहीं मिलता। इन्हें घृणित दृष्टि से देखा जाता है। यह वर्ग आज समाज मे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। नीरजा माधव, महेंद्र भीष्म,प्रदीप सौरभ चित्रा मुद्गल,राही मासूम रज़ा, इकरार अहमद,अंजना वर्मा,शिवप्रसाद सिंह एवं किरण सिंह आदि जैसे कई साहित्यकारों ने किन्नर समाज की जीवन-शैली एवं उनकी समस्याओं को साहित्य में प्रस्तुत किया है।

शिवप्रसाद सिंह की 'बिंद महाराज' इस पुस्तक की पहली कहानी है। इस पुस्तक की सारी कहानियां चरित्र प्रधान हैं। यह कहानी भी चरित्र प्रधान है। 'बिंद महाराज' इस कहानी का मुख्य पात्र जो एक किन्नर समदुाय का प्रतिनिधित्व करता है। लखेक ने इस कहानी एवं इसके मुख्य पात्र 'बिंद महाराज' के माध्यम से समाज पर एक बहुत बड़ा एवं गम्भीर प्रश्न खड़ा किया है। यह प्रश्न रिश्तों, प्रेम एवं सम्वेदनाओं का है।जिससे यह किन्नर समदुाय हमेशा से अछूत रहे हैं। एक इंसान जब पैदा होता है तो उसके साथ उसका औरों के साथ रिश्तों का भी जन्म होता है। परन्तु एक किन्नर के पैदा होने से उनका दूसरों के साथ रिश्तों की मौत हो जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पूर्वाग्रहों से ग्रसित समाज तो केवल पुरुष और स्त्री से मिलकर बनता है। वहां ऐसे समदुाय के लिए कोई जगह नहीं जिनका कोई लिंग नहीं है। "दुनिया के सारे नाते-रिश्ते केवल पुरुष और स्त्री से है। वीओरित लिंगों का आकर्षण एक के दायरे की तमाम वस्तुएं दूसरे से उसी प्रकार सम्बन्ध हैं । बिंद महाराज का दुनिया में कोई रिश्ता नही हो, भी कैसे, ना तो वह मर्द है ना औरत।" लेखक के द्वारा कहा गया यह कथन किन्नर समदुाय के तरफ से समाज के ऊपर एक बड़ा प्रश्न खड़ा करती है कि क्या सामाजिक रिश्तों के लिए लिंग का होना जरूरी है, एक इंसान होना काफी नहीं है ?

प्रेम इस समदुाय के लिए एक मरीचिका के समान है वह जितना उसके पास जाते है वह उतना ही उनसे दूर और ओझल होते जाते हैं। "प्रेम शब्द उसके लिए केवल शब्द था, निर्जीव शब्द, रूढ़ अर्थ।" लेखक ने इंसानों के 'प्रेम' शब्द पर भी गम्भीर बात कही। लोगों के प्रेम का आधार अगर लिंग है तो वह प्रेम, प्रेम नहीं एक निर्जीव और रूढ़ अर्थ देने वाला मात्र एक शब्द है। लोग। लेखक का संकेत यह है कि अब प्रेम शब्द के अर्थ में बदलाव की जरूरत है। क्योंकि उसका दृष्टिकोण अब रूढ़ हो चुका है।

इस पुस्तक की दूसरी कहानी 'राही मासूम रजा' की 'खालिक अहमद बुआ'' है। इस कहानी का आधार एक किन्नर का सैकग एवं एकनिष्ठ प्रेम है। खालिक अहमद बुआ जो एक किन्नर है, वह रुस्तम खाँ से अगाध एवं निश्छल प्रेम करती है और उस पर बहुत विश्वास भी करती है। परंतु कहीं न कहीं अपने इस रिश्ते को असुरक्षित भी महससू करती है। एक साधारण इंसान की तरह ही खलीक अहमद बुआ भी प्रेम के बदले प्रेम और भरोसे के बदले भरोसा चाहती है परंत उस अभागन को सच्चा प्रेम भी नसीब नहीं होता। रुस्तम ख़ाँ उसका भरोसा तोड़ देता है और एक वैश्या के पास चला जाता है। यह कहानी दर्शाती है कि कहीं न कहीं एक किन्नर का जीवन एक वैश्या की तुलना में भी ज्यादा कष्टकर होता है।

डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी द्वारा संपादित कहानी संग्रह 'थर्ड जेंडर चर्चित कहानियां' में संकलित 'किरण सिंह' की कहानी 'संझा' एक ऐसी कहानी है जिसके माध्यम से लेखिका ने 'किन्नर जीवन' के विभिन्न पहलुओं एवं समस्याओं को परत दर परत खोलने का प्रयास किया है। इस कहानी संग्रह के संपादक डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी 'किन्नर व हिजड़ा' के संदर्भ में कहते हैं, " हिजड़ा उर्दू शब्द है जो अरबी के हिज्र शब्द से लिया गया है। जिसका आशय अपने कबीले को छोड़ना है। अर्थात घर-परिवार एवं समाज से अलग होना। उर्दू अथवा हिंदी में प्रयुक्त हिजड़ा शब्द को अन्य शब्दों जैसे- हिजिरा, हिजदा, हिजरा, हिजादा, हिजारा और हिजराह शब्द से संबोधित किया जाता है। उर्दू के ख्वाजा सरा शब्द हिजड़ा का समानार्थी है। दूसरे अन्य शब्द खसुआ और खुसरा है। अंग्रेजी में इसे यनक अथवा हर्मा फ्रोडाइट से जोड़ा जाता है। बंगाली में इन्हें हिजरा, हिजला, हिजरी से संबोधित किया जाता है। तेलगू में उन्हें नपुंसकडू, खोजा अथवा मादा, तमिलनाडु में अली, अरावनी। पंजाबी में खुसरा,जंखा, सिंधी में खदरा, गुजराती में पवैया, मराठी में हिजड़ा आदि नामों से जाना जाता है।"

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

डॉ. सूर्यवंशी ने न केवल 'किन्नर' को परिभाषित ही किया बल्कि इनके समाज की भी व्याख्या की और इनके समाज के बारे में बहुत सारी जानकारियां भी दी। जैसे इन्होंने कहा कि, " हर घर या घराने का एक मुखिया होता है। जिसे नायक कहते हैं। नायक के नीचे गुरु होते हैं फिर चेले। गुरु का दर्जा मां-बाप से कम नहीं होता। हर किन्नर को अपने गुरु को अपनी कमाई का एक हिस्सा देना होता है। उम्र दराज उस्ताद का काम हिसाब-किताब रखना होता है। गुरु के नीचे काम करने वाले सभी चेले घराने की बहुएँ कहलाती है। हालांकि घराने के अंदर भाई,बहन, बुआ, चाची, दादा,दादी आदि का अपना स्थान है। जो किन्नर पुरुष की तरह रहता है, उसे भाई कहा जाता है। ऐसे ही महिला प्रवृत्ति के किन्नरों को बहन का ओहदा दिया जाता है।" इस तरह हम देखते हैं कि किन्नरों का समाज और उनका पारिवारिक जीवन आम समाज के परिवारों की तरह ही होता है।

जैसा कि डॉ. सूर्यवंशी जी ने किन्नर को परिभाषित करते हुए हिज्र शब्द का आशय 'अपने कबीले को छोड़ना' बताया। यही 'बिछड़ना' इस पूरे किन्नर समाज की सबसे बड़ी त्रासदी है। किन्नर होने पर उन्हें अपने परिवार, समाज एवं अपनों को छोड़ कर उनसे दूर एक अलग वर्ग में जीने को विवश किया जाता है। मेरे ख्याल से ये ही इस समाज की सबसे बड़ी एवं गंभीर समस्या है।[11]

किरण सिंह की कहानी का शीर्षक इस कहानी के मुख्य पात्र 'संझा' के नाम पर ही रखा गया है। 'संझा' चौगाँवा के सबसे इज्जतदार आदमी वैद्य महाराज के घर आठ वर्ष बाद जन्मा संतान है। जब एक परिवार में आठ वर्षों बाद एक संतान का जन्म हो और वह भी किन्नर हो, तो उस परिवार पर क्या बितती है इसी का बड़ा ही मार्मिक चित्रण इस कहानी में किरण सिंह जी के द्वारा किया गया है। वैद एवं बैदाइन द्वारा अपनी बेटी का नाम संझा रखने के पीछे का तर्क बड़ा ही मार्मिक है, "संझा! हुँह! इनकी बेटी में दिन और रात दोनों का मिलन है। इसलिए वह सिर्फ दिन और सिर्फ रात से अधिक पूर्ण-पहर है।"

मां की मृत्यु के पश्चात संझा का पालन-पोषण उसके पिता वैद्य जी ही करते हैं। वैद्य जी के माध्यम से यह भी बताया गया है कि एक किन्नर के परिवार को समाज में कितनी सारी कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यहां पर एक पिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह पिता हर हाल में अपनी बेटी संझा को आने वाली कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं एवं जीवन की सीख उसे देना चाहते हैं ताकि संझा अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों से निडरता पूर्वक संघर्ष कर सके। संझा की मां की मृत्यु के बाद उसके पिता वैद्य जी बेचैन हो जाते हैं। उनका बेचैन होना सार्थक है। वे जानते हैं कि अगर उन्होंने भी समझा का साथ छोड़ दिया तो समझा इस समाज में अकेली जी नहीं पाएगी। या यूं कहें कि समाज उसे जीने नहीं देगा। अपनी कठिन परिस्थिति को वे भली-भांति समझते हैं। इसलिए वे कहते हैं, " जो जिंदा है, उसे देखना है। मैं भी मर गया तो! नहीं, नहीं!..... मुझे जीने की सारी शर्तें मंजूर है।" इन पंक्तियों में एक पिता की जिम्मेदारी झलकती है और दिखता है कि वह किन विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। वैद्य जी ने संझा को केवल पाला ही नहीं बल्कि बाल मनोस्थिति में उठने वाले सारे कठिन प्रश्नों का जवाब देते हुए जीवन की सीख दी एवं उसे समझदार बनाया। बच्चों का मन बहुत चंचल होता है क्योंकि उस समय उनके मन में कई सारे सवाल पैदा होते रहते हैं। उनमें एक असंतोष की भावना रहती है। संझा कि मानसिक स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है। चूंकि वह केवल शारीरिक रूप से दूसरे साधारण बच्चों से अलग है। इसलिए संझा का मन अशांत रहता है। उसका मन कई सारे प्रश्नों में उलझा रहता है। और इन सारे प्रश्नों का जवाब अपने पिता वैद्य जी से मांगती है।जिसका कोई सार्थक जवाब उनके पास नहीं होता। संझा के ये प्रश्न इतने गंभीर एवं महत्वपूर्ण हैं कि वो केवल उनके पिता से ही नहीं ऐसा लगता है मानो पूरे समाज पर प्रश्न खड़ा कर रही है। वैद्य जी संझा से कहते हैं, " किस्मत ने एक जरूरी अंग हटाकर तुम को पैदा किया है बेटी।" संझा इस पीड़ाजनक वाक्य का कितना सार्थक एवं तार्किक सवाल पूछती है कि, " जीवन के लिए सबसे जरूरी तो आंख है। जोगी चाचा अंधे पैदा हुए। जरूरी तो हाथ है। बिंदा बुआ का दाहिना हाथ कोहनी से कटा है। रामाधा भैया तो शुरु से खटिया पर पड़े हैं, रीड की हड्डी बेकार है। विसम्भर तो पागल है, जनम से बिना दिमाग का। क्या... वो.. वो आंख, कान, हाथ,पांव, दिमाग से भी बढ़कर होता है?" संझा के ये सवाल कितने तार्किक हैं। इन सवालों का न तो उसके पिता वैद्य जी के पास है और न ही हमारे पूरे समाज के पास। किरण सिंह की यह कहानी किन्नर जीवन के सार्थक प्रश्नों का मूलभूत आधार है। कहानी में संझा और उसके पिता वैद्य जी के तर्कपूर्ण संवाद इस कहानी की मूल में छिपी समस्याओं को उजागर करती है। साथ ही यह कहानी यह बताती है कि केवल किन्नर ही नही बल्कि उसके साथ उनका परिवार भी समाज से काट जाता है।

उसी तार्किक संवाद के क्रम में एक और संवाद है जहाँ पर पिता वैद्य जी संझा की मूल समस्या उसके लिंग पर उठाते हैं। उसके पिता कहते हैं कि, "तुम बंस नहीं बढ़ा सकती।" इस बड़े प्रश्न का उत्तर भी संझा बड़े तार्किकता के साथ देती है। वह कहती है, "गाँव में ऊसर औरतें भी हैं, मान से रहती हैं। बाउदी आप चुप क्यों हैं। क्या मैं किसी के

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

काम की नहीं?" संझा का ये प्रश्न पूरे समाज से है। कि क्या किसी मनुष्य के जीवन का उद्देश्य केवल वंश बढ़ाना होता है? ये एक बड़ा प्रश्न संझा ने समाज के समक्ष उठाया है।

किन्नर जीवन की समस्याओं की गंभीरता को समझते हुए डॉ. इकरार अहमद ने इस समस्या पर विमर्श की मांग की है और इस संदर्भ में उन्होंने कहा है कि, " उत्तर आधुनिकता के इस दौर में जब विमर्श राजनैतिक रूप लेते जा रहे हैं ऐसे समय में हिंदी साहित्य में तीसरे विमर्श के रूप में थर्ड जेंडर की उपस्थिति एक सुखद अनुभूति का आभास कराती है। इसकी उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि हिंदी साहित्यकार समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है।"

इस कहानी की सबसे विशेष बात यह है कि वैध जी के सामने विषम परिस्थितियां होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी बेटी संझा को अच्छी परवरिश दी एवं उसे विचार सम्पन्न एवं आत्मनिर्भर बनाया। इसी सीख के सहारे संझा, बाद में आई उन तमाम कठिनाइयों एवं समस्याओं का डटकर सामना करती है।अपने समक्ष आयी विपरीत परिस्थितियों से निडरतापूर्वक संघर्ष करती है। यह कहानी पूरे किन्नर वर्ग को अपने भाग्य से लड़ने के लिए प्रेरित एवं तैयार करता है। इसलिए कहानी की अंतिम पंक्तियाँ उन सब पर प्रश्न खड़ा करती है जो अपने भाग्य को ही नियति मानकर बैठ जाते हैं और हार मान लेते है। " मैं अब तक भाग्य था। लेकिन किसी मजबूर पर ताकत आजमाने वाला और किसी मजबूत की ताल से दुबक हुआ, मैं सबसे बड़ा हिजड़ा हूँ।" इस तरह संझा अपनी चारित्रिक गुणों एवं विचारों से इस कहानी और समाज मे अपनी उपस्थिति एवं उपयोगिता दोनों दर्ज कराती है।

इस संकलन की चौथी कहानी डॉ पद्मा शर्मा की "इज्जत के रहबर है'। इस कहानी का आरंभ श्रीलाल के भाई के विवाह के बाद सोफिया के नेतृत्व में नेग लेने आयी हिजड़ों की एक टोली से होता है। उसी से श्रीलाल की बेटी का स्थानीय गुंडों द्वारा बलात्कार हो जाता है। इसका पता जब सोफिया को चलता है तो उसे बहुत बड़ा झटका लगता है। क्योंकि उसे पता है कि अपनी इज्जत खराब होने के डर से श्रीलाल इस घटना के बारे में पुलिस को नहीं बताएगा। पर सोफिया उस गुंडे को उसके कुकर्म की सजा देना चाहती थी। और एक दिन सोफिया चोरी-छुपके उस गुंडे को पकड़कर उसका लिंग काट देती है। अतः सोफिया एक किन्नर होते हुए भी अपनी दिलेरी और साहस का परिचय देती है। साथ ही अपने कर्तव्य का पालन करते हुए समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है।

अगली कहानी अंजना वर्मा की 'कौन तार से बीनी चदरिया' है। यह कहानी भी एक किन्नर और उसके परिवार की सम्वेदनाओं पर आधारित एक मार्मिक कहानी है। सुंदरी का एक संपन्न परिवार में जन्म होते हुए भी एक किन्नर होने के कारण, उसे अपने घर -परिवार, मां-बहन से दूर अलग रहना पड़ता है। एक बच्चे को जन्म देने वाली माँ की ममता तो सदा उस बच्चे पर बनी रहती है फिर चाहे वह बच्चा किसी भी लिंग का क्यों ना हो। परन्तु रूढ़िवादी विचारधारा के कारण एक किन्नर को अपने परिवार से अलग होना पड़ता है जो सबसे दुःखद घटना है। इस अलगाव में किन्नर और उसका परिवार दोनों को एक भयावह पीड़ा से गुजरना पड़ता है। यह कहानी भी इन दोनों के सम्वेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति है।

अगली कहानी महेंद्र भीष्म की 'त्रासदी' है। यह कहानी किन्नर जीवन की त्रासदी को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त करती है। साथ ही लेखक ने एक किन्नर की त्रासदी को एक स्त्री की त्रासदी के साथ जोड़ने का प्रयास किया है एयर यह बताया कि एक किन्नर का जीवन कितना असुरक्षित एवं भयावह होता है। साथ ही लेखक ने यह भी बताया कि त्रासदी की परिभाषा एक किन्नर के लिए कुछ और, और एक सामान्य इंसान के लिए कुछ और ही होती है।

इस संकलन की अगली कहानी के रूप में संजय गरिमा दुबे की कहानी 'पन्ना बा' है। इस कहानी के माध्यम से समाज में किन्नरों को लेकर विभिन्न प्रकार की मान्यताओं एवं जिज्ञासाओं को उद्घाटित किया गया है। साथ ही यह कहानी किन्नरों के प्रति समाज की नकारात्मक एवं भेदभाव के मानसिकता को दिखाते हुए उनके प्रति सम्मान एवं संवेदना की भावना रखने की गुहार लगता है। क्योंकि इस कहानी का मुख्य किन्नर पात्र 'पन्ना बा' समाज में संवेदनाओं के अभाव के कारण खुद से ही घृणा करने को मजबूर हो जाती है और उसका जीवन निरुद्देश्य एवं बिना किसी लक्ष्य या सामाजिक योगदान के ही गुजर जाता है। किन्नर समुदाय भी समाज में अपना योगदान देना चाहते हैं पर समाज उन्हें मौका नहीं देती। लेखक ने 'पन्ना बा' चरित्र के माध्यम से किन्नर जाति के सामाजिक उद्देश्य पर गंभीर चिंता व्यक्त की है।[10,11]

संदर्भ

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

संदर्भ-ग्रंथ

1)किन्नर विकिपीडिया

2)मैं पायल-महेन्द्र भीष्म-पृ.24

3)मेरे हिस्से की धूप-नीना शर्मा हरेश-पृ.91

4)मेरे हिस्से की धूप-नीना शर्मा हरेश-पृ.28-29

5)अस्तित्व की तलाश में सिमरन-डॉ.मोनिका शर्मा-पृ.98

6) अस्तित्व की तलाश में सिमरन-डॉ.मोनिका शर्मा-पृ.22

7)अस्तित्व की तलाश में सिमरन-डॉ.मोनिका शर्मा-पृ.35

8)दरमियाना-सुभाष अखिल-पृ.15

9) दरमियाना-सुभाष अखिल-पृ.18

10) अस्तित्व की तलाश में सिमरन-डॉ.मोनिका शर्मा-पृ.93

11)अस्तित्व की तलाश में सिमरन-डॉ.मोनिका शर्मा-पृ.97

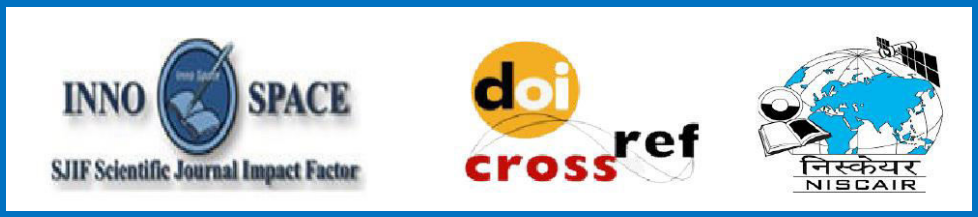

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

www.ijarety.in

editor.ijarety@gmail.com